एकल नारी की आवाज

अंक : 36, माह : नवम्बर, वर्ष : 2014, निजी प्रसार हेतु

तोड़, तोड़ के बंधनों को देखो बहनें आती हैं..

संगठन की ओर से तीन दिवसीय जिला स्तरीय सदस्य सम्मेलन आयोजित

सम्मेलन में उद्घाटन करते हुए संगठन की बुजुर्ग सदस्याऐं एवं रस्सी के द्वारा एकता के बारे में बताते हुए तथा रैली निकालते हुए सदस्याऐं

एकल नारी शक्ति संगठन की ओर से इस बार तीन जिलों में जिला स्तरीय सदस्य सम्मेलन का आयोजन किया गया जो इस प्रकार से है :-

1. प्रथम जिला स्तरीय सदस्य सम्मेलन दिनांक 21 से 23 सितम्बर, 2014 तक, किसान भवन, उदयपुर में आयोजित किया गया। जिसमें उदयपुर जिले के उदयपुर शहर, झाड़ोल, गिर्वा, कोटड़ा, सलूम्बर, गोगुन्दा, सराड़ा, खैरवाडा की आठ ब्लॉक की 170 एकल महिलाओं ने भाग लिया।

2. द्वितीय जिला स्तरीय सदस्य सम्मेलन दिनांक 7 से 9 अक्टूबर, 2014 को आदर्श हितकारिणी ट्रस्ट, राजा पार्क, जयपुर में आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 89 एकल महिलाओं ने भाग लिया।

3. तृतीय जिला स्तरीय सदस्य सम्मेलन दिनांक 28 से 30 अक्टूबर, 2014 को महर्षि दधिचि छात्रावास आकाशवाणी कॉलोनी, कोटा में आयोजित किया गया। इस जिला स्तरीय सदस्य सम्मेलन में कोटा जिले के छः ब्लॉकों सुल्तानपुर, सांगोद, ईटावा, खैराबाद, लाडपुरा, व कोटा शहर से 240 एकल महिलाओं ने भाग लिया।

तीनों ही सम्मेलनों के प्रथम दिवस में भाग लेने वाली सभी संभागियों का मंगल लच्छा बांधकर व रौली का तिलक लगाकर स्वागत किया गया। यह स्वागत समाज के उन लोगों पर प्रहार है जो समझते हैं कि विधवा महिला मंगल कार्यो में हिस्सा नहीं ले सकती है। उसके पश्चात् संभागियों ने ''हम भारत की नारी हैं, फूल नहीं चिंगारी हैं'' '' महिला हिंसा नही सहेंगे, नही सहेगे'', ''दो हाथो मे काम दो, काम का पूरा दाम दो'' नारे लगाते हुए अपनी शक्ति का परिचय दिया।

कोटा, जयपुर व उदयपुर सम्मेलनों में उद्घाटन के लिए संगठन की सबसे बुजुर्ग सदस्यों को चुना गया था। जिन्होंने दीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन किया और अपने विचार रखे। कोटा सम्मेलन में रामकन्या बाई, ब्लॉक ईटावा उम्र 75 वर्ष ने उद्घाटन के अवसर पर कहा कि पति की मृत्यु के बाद 13 साल पहले संगठन से जुड़ी और जीना सीखा और बहिनों को भी मजबूत बनाया, उन्होंने कहा कि ''कुण केवे क पाका हाण्डा गार कोनी लागे कौशिश करे तो सब लागे'' वही गजराज कंवर, लाडपुरा ने कहा कि आज संगठन ने हमें उद्घाटन करने का अवसर देकर हमारा सम्मान किया है।

हमारी कोशिश है कि कोई भी एकल महिला अपने आप को कमजोर ना समझे संगठन आपके साथ हैं'' वहीं उदयपुर सम्मेलन के उद्घाटन के दौरान सुन्दर बाई व धर्मी बाई ने अपने विचार व्यक्त करते हुऐ कहा कि '' समाज ने हमें विधवा होने के बाद हाशिये पर खडा कर दिया परन्तु संगठन ने हमें इतना सम्मान दिया है, संगठन से हमें बहुत हिम्मत मिली है, यही हमारा परिवार है''।

सम्मेलन जिन प्रमुख उद्देश्यों को लेकर आयोजित किये गये उनमें एकल महिलाओं की मुख्य समस्याओं की पहचान कर उनकी स्थिति को समझना, समस्याओं का विश्लेषण करना व संगठन के माध्यम से समाधान करना है। समाज में एकल महिलाओं की स्थिति को बदलना ताकि प्रत्येक एकल महिला समाज में सम्मान व गुणवत्तापूर्ण जीवन जी सके व रणनिति तय करना, संगठन का महत्व व ढाचा प्रक्रियाा समझना, इसके अलावा खाद्य सुरक्षा कानून, नरेगा, महिलाओं से

- शेष पृष्ठ-2 पर....

''जब आधा भारत नारी है, जमीन-सम्पत्ति में बराबर की दावेदारी है।

जोश से भरपूर रहा ब्लॉक कमेटी सदस्य प्रशिक्षण, सीकर

सीकर, 31 अक्टूबर। ''जब आधा भारत नारी है, फिर नारी क्यों बेचारी है, बन जा बहिना झांसी की रानी , खत्म करो यह जुल्म कहानी'' इस प्रकार के जोश पूर्ण नारों के साथ दिनांक 31 अगस्त से 3 सितम्बर, 2014 तक एकल नारी शक्ति संगठन द्वारा गौतम भवन, सीकर में चार दिवसीय ब्लॉक कमेटी सदस्य प्रशिक्षण का शुभारम्भ किया गया। इस प्रशिक्षण में सीकर, गंगानगर, चुरु व झुंझुनू जिले के 9 ब्लॉक की 75 ब्लॉक कमेटी सदस्याओं ने भाग लिया। प्रशिक्षण में आई बहनों का कार्यकर्ताओं द्वारा रौली का तिलक लगाकर व लच्छा बांधकर स्वागत किया। इसके बाद बहनों ने जोश के साथ नारे लगाये तथा अपना परिचय माईक के माध्यम से दिया।

सीकर प्रशिक्षण में जोश के साथ गीत गाती हुई सदस्याऐं

प्रशिक्षण के दौरान समूह में बैठाकर बहनों की समस्याऐं निकलवाई गई जिसमें आवास की समस्या, ससुराल व पीहर में सम्पत्ति में अधिकार न मिलना, मजदूरी करने जाते हैं तो असुरक्षा, नरेगा में पूरी मजदूरी नहीं मिलना, बच्चों का भरण पोषण, कोर्ट मे जाते हैं तो सालों तक न्याय नही मिल पाता, सामाजिक सुरक्षा पेंशन समय पर नही मिलना, खाद्य सुरक्षा में अनाज कम मिलना व समय पर नही

- शेष पृष्ठ-3 पर....

ये हौंसलों की उड़ान है...

फिर चल पड़ी ठहरी हुई जिन्दगी

हम बहनें केवल घर के काम या झाड़ू-पौंछा बर्तन के लिए ही नहीं बनी हैं, यदि हमें सम्मान और गुणवत्तापूर्ण जीवन जीना है और अपनी एक अलग पहचान बनानी है तो अपनी सोच को बदल कर आगाज़ करना होगा एक नई जिन्दगी के लिए क्योंकि एक नई दुनिया मुमकिन है।

बहनों मैं चॉद खान हूँ। मैं भी आपकी जैसी ही एकल महिला हूँ और मेरे चार बच्चे हैं। आज से एक साल पहले मैं मेरे जीवन से बहुत दुख थी, जब मैं आज़ाद में छः माह वाली महिला चालक ट्रेनिंग में जुड़ी उस समय मेरे परिवार की सामाजिक व आर्थिक हालत बहुत खराब थी। मैं मेरे पति की मौत के बाद से ही घर चलाने के लिये छोटी-मोटी नौकरी करती आ रही हूँ।

मैं अपने बच्चों का पेट पालने के लिए कभी दूसरों के घरों में झाड़ू-पौंछा करती थी तो कभी हॉस्टल में चौकीदारी। लेकिन आज जब मैं अपने आप को देखती हूँ तो मुझे विश्वास ही नहीं होता कि मैं वही चॉद हूँ। आज़ाद संस्थान से जुड़ने से पहले मुझे रोड़ पर चलने से भी डर लगता था। लेकिन आज मैं मारूती ड्राइविंग स्कूल में महिलाओं को कार चलाना सीखा रही हूँ और अपना व अपने बच्चों का गुजारा बहुत अच्छे से चला रही हूँ।

मैरे इस अनुभव की शुरूआत तब हुई जब मुझे आज़ाद के रोजगारपरक कोर्स के बारे में किसी से जानकारी मिली। ये संस्था महिलाओं को रोजगार उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से उन्हें कार चलाना सिखाती है तथा जब महिलाऐं इस काम में महारथ हांसिल कर लेती हैं तो वे स्वयं ड्राईवर बन अपने पैरों पर खड़ी होकर अपना व अपने परिवार का गुजारा अच्छे से चला सकती है। शुरूआत में मुझे भी विश्वास नहीं हो रहा था कि मेरी जिंदगी में कुछ नया होगा किन्तु कोर्स पूरा करने के बाद मेरा जीवन बहुत बदल गया है।

अब मैं मेरे आस-पास रहने वाली महिलाओं को भी ड्राईविंग कोर्स हेतु इस संस्था से जुड़ने की सलाह देती हूँ।

संपर्क करने हेतु जानकारी

जो भी एकल महिलाऐं जिनकी उम्र 18 से 35 वर्ष की हैं या एकल महिलाओं की बेटियां हैं जो कि 8 वीं पास हैं, यदि वे ड्राईविंग सीखना चाहती हैं और अपने लिए एक सम्मानपूर्ण रोजगार चाहती हैं वो एकल नारी शक्ति संगठन कोटा व उदयपुर के कार्यालय पर संपर्क करें।

कार्यालय का पता एकल नारी की आवाज के अंतिम पृष्ठ पर फोन नम्बर सहित उपलब्ध है।

जानकारी है तो हर राह आसान है

संतोष बाई बारां जिले की रहने वाली एक गरीब एकल महिला है। ये पैरों से विकलांग है। इनकी एक ही इच्छा थी कि वह अपनी बेटी पूजा को एक अच्छे स्कूल में पढ़ाऐ लेकिन गरीबी के चलते वो उसका दाखिला नहीं करवा पा रही थी। एक बार उसने कोशिश कर अपनी बेटी पूजा का दाखिला एक प्राईवेट स्कूल में करवा भी दिया लेकिन गरीबी के चलते पूजा को स्कूल से निकाल दिया गया। संतोष बाई बहुत परेशान थी। वे उसको लेकर सरकारी स्कूल भी गई लेकिन वहां भी पूजा को मानसिक रोगी बताकर दाखिला करने से मना कर दिया।

एक बार संतोष बाई एकल नारी शक्ति संगठन की ओर से आयोजित राज्य स्तरीय विशेष योग्यजन एकल महिला सम्मेलन में आई। सम्मेलन में समुह चर्चा के दौरान संतोष बाई पूजा की पढ़ाई की समस्या के बारे में बताया। इस पर शिक्षा का अधिकार कानून पर कार्य कर रहे हरिओम सोनी ने इस मुद्दे को गंभीरता से लिया और बारां जिले में काम कर रहे संकल्प संस्थान के कार्यकर्ताओं के सहयोग से उसका दाखिला स्कूल में हो गया है। इसमें पूजा की मां की मजबूत इच्छा शक्ति और साथ ही पूजा की पढ़ने की ललक का भी योगदान है। अब पूजा ऐसे स्कूल में है जहां न कोई फीस लगती है और न ही पढ़ाई में किसी प्रकार की बाधा है। संतोष बाई आज बहुत खुश है वह संगठन को धन्यवाद देते हुए कहती है कि सरकार द्वारा शिक्षा के अधिकार को लेकर जो कानून बनाये गये हैं हमें उनकी जानकारी होनी चाहिए तभी हम असल मायनों में अपने हक ले सकेंगे। पूजा अब रोज विद्यालय जाती है। पूजा का सपना है कि वो एक दिन अच्छी शिक्षिका बनेगी।

-शेष पृष्ठ -1 का....संगठन की ओर से तीन दिवसीय जिला स्तरीय सम्मेलन ....

सम्बन्धित कानून समझना व पंचायत स्तर पर एकल महिलाओं को संगठित कर उनकी समस्याओं का समाधान करना व मुद्दे उठाने इसके बारें मे जानना है।

सम्मेलन भाग में आयी संभागियों को अलग-अलग समूह बनाकर उनकी सामाजिक, आर्थिक, पारिवारीक, समस्याओं पर चर्चा की गई जिसमें मुख्य रुप से निकल कर आया कि खाद्य सुरक्षा यौजना में 5 किलो अनाज प्रति व्यक्ति मिल रहा है वो बहुत कम है और वो भी समय पर नही मिल रहा, ससुराल व पीहर में एकल होने पर सम्पत्ति से बेदखल कर देते हैं और केस लडते हैं तो बरसों तक केस लडना पडता है, कई परित्यकता महिलाओं ने कहा कि पति से खर्चे के लिए 8-10 साल से केस लड़ रहे हैं पर कुछ नही हुआ, नरेगा में काम नही मिल रहा, पेंशन समय पर नही मिलती, बुजुर्ग होने पर बेटे-बहू ताने मारते हैं घर से निकाल देते हैं, यदि महिला एकल है तो लोग गलत दृष्टि से देखते हैं और उसका शोषण करने की कोशिश करते हैं। इन समस्याओं पर कार्यकताओं ने बहनों से चर्चा कर विश्लेक्षण किया।

सम्मेलन में बहनों को जानकारी देने हेतु विभिन्न विभागों से संदर्भ व्यक्तियों को आमंत्रित किया गया था जिसमें सामाजिक न्याय एंव अधिकारिता विभाग द्वारा विधवा, तलाकशुदा, विकलांग पेंशन, पालनहार योजना, विधवा पुत्री विवाह योजना, विधवा पुर्नविवाह योजनाओं की प्रक्रिया, नियमों की जानकारी दी गई । एकल महिलाओं ने पालनहार समय पर नही मिलने, कई बार पेंशन फार्म भरने के बावजूद पेंशन नही मिलने व अनियमित पेंशन मिलने की समस्या रखी।

रसद विभाग से पधारे संदर्भ व्यक्तियों द्वारा खाद्य सुरक्षा अधिनियम, राशन वितरण प्रणाली, राशन व्यवस्था के बारे में जानकारी दी गई। जिसमें खैराबाद के सातलखेडी पंचायत में राशन डीलर द्वारा मनमानी करने व गेहूँ समय पर वितरण नहीं करने की समस्या बताई साथ ही संभागियों ने कहा कि सरकार 5 किलो अनाज देकर हमारा मजाक उड़ा रही है।

कम से कम प्रति व्यक्ति 10 किलो अनाज तो मिलना चाहिए, अन्यथा इस व्यवस्था को बन्द करो, उन्होंने पूछा कि क्या एक व्यक्ति एक माह मे 5 किलो ही अनाज ही खाता है? कोटा सम्मेलन में खाद्ध सुरक्षा के बारे में जानकारी देते हुए संदर्भ व्यक्ति द्वारा सभी एकल महिलाओं की सूची मांगी गई ताकि उनका नाम खाद्य सुरक्षा मे जुड़ा जा सके।

सम्मेलन में बहनों को महिला सुरक्षा एंव सलाह केन्द्र के कार्यो की जानकारी दी गई। जिसमें बताया कि छोटे-छोटे घरेलू झगड़े, मनमुटाव से घर ना टूटे इसलिए केन्द्र पर दोनो पक्षों की समझाईश की जाती है और कोई भी महिला जो पीड़ित है केन्द्र पर आकर अपनी समस्या बता सकती है।

जिला परिषद से संदर्भ व्यक्ति द्वारा नरेगा में आवेदन प्रक्रिया, बरोजगारी भत्ता, काम की नपती, पूरी मजदूरी, यदि भ्रष्टाचार हो रहा है या फर्जी नाम मस्ट्रोल मे जोडे जा रहे हैं तो कैसे कार्यवाही करनी है? इसके बारे मे जानकारी दी। जिसमे संभागियों ने नरेगा को लेकर काफी समस्याऐं रखी, काम मांगने पर काम ना मिलना, पूरी मजदूरी नही मिलना, फर्जी नाम मस्ट्रोल में जोड़ना आदि।

इसके अलावा बहनों को पुलिस प्रक्रिया व पुलिस ढाचें के बारें मे जानकारी दी गई

सम्मेलनों में वकील साहब द्वारा कानूनी जानकारी दी गई जिसमें घरेलू हिंसा अधिनियम, भरण पोषण, अपशब्द बोलना, सम्पत्ति सम्बन्धित अधिकारों के बारें में विस्तृत जानकारी दी गई। कई केस ससुराल द्वारा अत्याचार, जमीन सम्पत्ति में अधिकार के निकल कर आये।

साथ ही सम्मेलन में संभागियों को संगठन का महत्व व ढाचा कार्यकर्ताओं द्वारा बताया गया और कहा कि बिना संगठित हुऐ अपने अधिकार लेना मुश्किल है, जब तक हम संगठित नही होगें अपना अधिकार नही ले सकते।

सम्मेलन के अन्तिम दिवस में सभी संभागीयों ने सम्मेलन स्थल से कलेक्ट्री तक जोशपूर्ण नारों के साथ व गीतों के साथ रैली निकाल कर अपनी समस्याओं को लेकर जिला कलेक्टर को मांग पत्र दिया।

साहस व समझदारी से बचाई ट्रेन में महिलाओं की जान

यदि हम में आत्मविश्वास व साहस है तो ऐसी कोई समस्या नहीं जिसका समाधान नहीं हो–विद्या पारीक

विद्या पारीक उम्र 54 वर्ष निवासी छबड़ा, जिला बांरा की निवासी है और पिछले लगभग 3 वर्ष से संगठन कार्यकर्ता के रुप मे कार्य कर रही है। विद्या पारीक के पास दो ब्लॉक है जिसमें एक छबडा व दूसरा चौथ का बरवाड़ा है। अप्रेल माह की बात है, विद्या पारीक चौथ का बरवाड़ा ब्लॉक की बैठक लेने जा रही थी। वह कोटा से जयपुर वाली ट्रेन मे बैठी उन्हे बीच में चौथ का बरवाड़ा उतरना था। कुछ महिलाऐं ट्रेन के महिला कोच में बैठी थी। कोच आधा खाली था तो विद्या पारीक भी उस कोच मे बैठ गई। इतने में कोटा से एक जवान लड़की चढी। वह देखने मे काफी सभ्य व पढ़ी लिखी लग रही थी।

जैसे ही ट्रेन को चलते हुए आधा घंटा हुआ उस लडकी ने अपने हाथ मे कुछ पावडर जैसा निकाला और जो चार पांच महिलाऐ बैठी थी उनकी ओर हाथ में लेकर फूंक से उड़ा दिया और वह चारो पांचो महिलाऐ बेहोश हो गई। और विद्या पारीक यह सब देखकर दंग रह गई। उसने उस लड़की से पूछा की इनको क्या हुआ तो वो बोली मुझे क्या पता क्या हुआ। विद्या पारीक समझ गई कुछ गड़बड़ है। उसने जल्दी से ट्रेन की चैन खींच दी और ट्रेन रुक गई वो लड़की विद्या पारीक पर खूब चिल्लाई की चैन क्यों खीची तो उसने कहा कि मेरे पति के पास मेरा टिकिट है मुझे तो यही उतरना था तो वो लड़की खूब चिल्लाई उसने कहा पता नही कहां -कहां से गंवार लोग बैठ जाते हैं।

ट्रेन रुकते ही सारे टी0टी0 वहा आ गये पूछा क्या हुआ तो उस लडकी ने कहा कि यह तो गंवार है इसका पति आगे वाले कोच मे था तो चैन खींच दी। इतने मे विद्या पारीक ने उन्हे पूरी घटना बताई और पुलिस वालों ने अन्दर जाकर देखा तो दंग रह गये 4 महिलाऐ बेहोश पड़ी हुई थी।

पुलिस वालों ने उस लड़की को पकड़ा और उसकी तलाशी ली तो उसके बैग मे 52 मोबाईल मिले व साथ ही हाथ के नाखूनों मे ब्लेड लगे हुऐ पुलिस ने उसे गिरफ्तार किया व महिलाओं को अस्पताल पहुंचाया। पुलिस वाले व टी0टी ने विद्या पारीक की होशियारी व समझदारी देखकर उसे धन्यवाद दिया। संगठन कार्यकर्ता ने उन्हें अपना परिचय दिया तो उन्होंने कहा कि वाकई आपमें बहुत साहस है जो कि सराहनीय है। आपकी वजह से कई महिलाओं की जान बची है और बडी घटना होने से बच गयी है। विद्या पारीक ने कहा कि यह शक्ति व साहस मुझे संगठन से मिला है।

–शेष पृष्ठ –1 का ....जोश से भरपूर रहा ब्लॉक कमेटी सदस्य प्रशिक्षण .....

मिलना, पानी व बिजली की समस्याऐं निकलकर सामने आयी। इन समस्याओं मे से मुख्य समस्याओं को निकाल कर उनका विश्लेक्षण किया गया।

प्रशिक्षण में श्रीमाधोपुर ब्लॉक से 55 वर्षीय ब्लॉक कमेटी सदस्य रामेश्वरी देवी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ''आज संगठन सूं जुड़वा क बाद म्हानें अतरी शक्ति व साहस मिल्यों क बिना पढ्या लिखया होबा के बावजूद भी खुद को और गांवा की दूसरी एकल बहिना को भी काम करवा देवां, आपणो व दूसरा को अधिकार दिलवा देवा पेल्या काई कोनी जाणाहा '' साथ ही गणपति देवी, लक्ष्मणगढ़ ने कहा कि ''सभी जगह घणो भ्रष्टाचार हो रह्यो है, नरेगा में जावां तो वां, पेंशन लेबा जावा तो वां, लेकिन अब म्हानें कोई कोनी पागल बणा सके, मैं संगठन सूं जुड्या छा म्हां भी सारा कानून जाणा और कोई रिश्वत लेसी तो म्हां वाने पकड़ा देसी जांच पार्टी सूं ''

यहां श्रीमती लक्ष्मी अय्यर द्वारा संभागियों को संगठन के उद्देश्य व महत्व के बारें मे बताया व संगठन के त्रिस्तरीय ढ़ाचे पर प्रकाश डाला गया। इसी दौरान केसर कंवर, नोहर ब्लॉक हनुमानगढ जिले से अपनी सफल केस स्टडी बतायी कि संगठन से जुड़ने के बाद राजपूत समाज के अनेक बन्धनों को तोड़कर घर से बाहर निकली व सभी योजनाओं का लाभ लिया और अपना अधिकार लिया। संदर्भ व्यक्तियों के द्वारा प्रशिक्षण में विभिन्न विभागों की जानकारीयां प्रदान की जिसमें एडवोकेट हरीश व सावरमल जी ने संभागियो को घरेलू हिंसा अधिनियम, दहेज, अत्याचार, छेड़छाड़, अपशब्द बोलना, सम्पत्ति व भरण-पौषण अधिकार के बारें मे जानकारी दी गई। बहिनों ने देवर, जेठ व बेटे बहुओं से प्रताड़ना सम्बन्धी समस्याऐं रखी। सामाजिक न्याय एंव अधिकारिता विभाग से ओमप्रकाश राहडाल द्वारा सामाजिक सुरक्षा पेंशन की प्रक्रिया नियम, पालनहार योजना, विधवा पुत्री विवाह अनुदान योजना, विधवा पुर्नविवाह अनुदान योजना के बारे में जानकारी दी। जिला परिषद से परियोजना अधिकारी रामगोपाल शर्मा ने संभागियों को भामाशाह योजना के बारे में बताते हुए योजना को लेकर अलग-अलग भ्रांतियों को दूर किया। जिला परिषद से आये समन्वयक भंवरलाल गुर्जर द्वारा निर्मल भारत अभियान के तहत शौचालय निर्माण के बारें मे जानकारी दी। उन्होने बताया कि सरकार इस योजना के तहत् 5,400 रु नरेगा से व 4,600 रु पंचायत से मिलते हैं,

नरेगा समन्वयक इमरान अली द्वारा नरेगा कानून के बारे में संभागियों को जानकारी दी गई जिसमे काम की मांग के बारे में, आवेदन करना, पूरी नपती पूरा पैसा, कार्य स्थल पर कोई भ्रष्टाचार हो रहा है तो उसे रोकना, काम करने वाले समूह का चयन व शिकायत के लिए टोल फ्री नम्बर की जानकारी दी गई। टोल फ्री नम्बर सभी को दिये गये। संभागियो ने कहा कि अब अगर काम पर नही रखेगे या कोई गड़बड़ी करेंगे तो हम इस नम्बर पर फोन करेंगे।

प्रशिक्षण संभागियों को ब्लॉक कमेटी सदस्यों की भूमिका के बारे में, संगठन के त्रिस्तरीय ढांचे व राजनैतिक प्रशासनिक ढांचे के बारे में, लोकतांत्रिक व्यवस्था के बारे में बताया। महिलाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान जोश के साथ नाटक मंचन, गीत व नृत्य की प्रस्तुती दी। इसी बीच एक संभागी ने कहा कि मैं समाज की कुरीतियों को चलते पति की मृत्यु के 10 साल बाद आज नाची हूँ। अलग-अलग ब्लॉक वाईज समूह बनाकर आगामी चार माह की कार्य योजना तय की गई कि किस प्रकार पंचायतों में जाकर सभी सदस्य एकल महिलाओं की बैठके लेंगे और एकल महिलाओं को संगठित करेगे।

मेरी खुशहाल जिन्दगी में संगठन का बहुत बड़ा योगदान है

बीत गया जो समय उसे क्या रोना है, हिम्मत का हथियार नहीं बस खोना है।

कमला मीणा 43 वर्ष की विधवा महिला है तथा उदयपुर में एकलव्य कॉलोनी निवासी है। इनका जीवन शुरु से ही कष्टपूर्ण रहा। बचपन में माता पिता अपनी आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण इन्हें शिक्षा नही दिला पाये।

9 साल की उम्र में इनकी शादी बिना जांच पड़ताल के राजु से करवा दी गई। राजु में सारी बुरी आदतें थी शराब पीना, मारपीट करना। कुछ समय तक तो कमला जी सहती रही, लेकिन कुछ समय बाद इन्हें पता चला कि राजु का गुजरात में एक और परिवार है। जब कमला ने यह बात घर वालों को बतायी तो किसी ने उन पर भरोसा नहीं किया। इस दौरान कमला ने दो बेटीयों को जन्म दिया पर राजु में कोई परिवर्तन नही आया। बेटियों के भरण पोषण का सोचते हुए कमला ने कागज की थैली घर पर बना का बेचना शुरु किया।

इसी दौरान आस्था कार्यकर्ता का कमला से सम्पर्क हुआ जब आस्था कार्यकर्ता को कमला की समस्या के बारे में पता चला तो उन्होंने राय दी कि वे नाम के लिये पति से रिश्ता न रखें। कमला जी ने उनके सुझाव को माना और राजु के साथ रिश्ता तोड़ दिया। वे उसी मोहल्लें में अपनी दोनों बेटियों के साथ रहने लगी पर कमला जी के पास आय का कोई साधन नही था उन्हें आस्था ऑफिस में सफाई कार्यकर्ता का कार्य दिया गया। चार साल तक वे अकेली ही अपना घर परिवार चलाती और बेटीयों को भी पढ़ाती रही। परिवार वाले व आस्था सदस्यों ने कमला को दूसरी शादी का सुझाव दिया। पहले तो कमला तैयार नही हुई लेकिन बच्चों व अपने जीवन का सोचते हुए उन्होंने धूलचन्द्र से शादी कर ली।

लेकिन पांच साल के सुखद वैवाहिक जीवन के बाद उनके पति का आकस्मिक दुर्घटना में देहान्त हो गया और कमला फिर से अकेली हो गयी। इस बार कमला जी पूरी तरीके से टूट गई, दो माह तक घर से बाहर नही निकली। आस्था कार्यकर्ता ने उन्हें हिम्मत दिलाई और फिर काम करने के लिये प्रेरित किया। कमला जी एकल नारी शक्ति संगठन से जुड़ी। साक्षरता अभियान से जुड़ कर इन्होंने पढ़ना- लिखना सीखा। आज कमला जी अस्पताल में मरिजों की सेवा करती व खाली समय में संगठन का कार्य करती है। संगठन की अन्य तीन सदस्यों सुशीला, शान्ता व मीरा को भी इन्होंने अपने प्रयास से अस्पताल में बाई के रूप में काम दिलवाया है।

''अगर आसमान में बादल छाये हैं तो साबियाना क्या करेगा...''

राष्ट्रीय एकल नारी अधिकार मंच की ओर से दो दिवसीय सम्मेलन आयोजित

''अगर आसमान में बादल छाये हैं तो साबियाना क्या करेगा,
जब बन ही गया राष्ट्रीय एकल नारी अधिकार मंच तो जमाना क्या करेगा''

बैठक के दौरान एक दूसरे का हाथ पकड़ कर एकजुटता का आव्हान करते हुए मंचासीन सदस्य

दिल्ली, 12 नवम्बर। जोर-शोर से नारों के साथ राष्ट्रीय एकल नारी अधिकार मंच की दो दिवसीय सलाहकार समिती बैठक 12-13 नवम्बर 2014 को आयोजित की गई, जिसमें 13 राज्यों- बिहार, झारखण्ड, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, पंजाब, महाराष्ट्र, उड़िसा, आन्ध्र प्रदेश, तेलांगना, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड व दिल्ली से 135 एकल महिला सदस्यों ने भाग लिया। उत्साहवर्धन गीत व नारों के साथ सभी एकल महिला सदस्यों ने दीप प्रज्वल्लित करके कार्यक्रम का आगाज किया। हिमाचल प्रदेश की एकल महिला सदस्यों ने एकल महिला की मंच तक संगठित होने की यात्रा को रोलप्ले के माध्यम से प्रस्तुत किया।

बैठक में राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष श्रीमती ललिता कुमारमंगलम, राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण मिशन, महिला एवं बाल विकास विभाग से डा. जुपाका माधवी, डा. सुनिता संघमित्रा, महिला एवं बाल विकास विभाग के सहसचिव शारदा अली खान, सामाजिक कार्यकर्ता निखिल डे, महिला किसान अधिकार मंच से सोमा के. पी., आई.सी.आर.डब्लू से प्रिती धीलन एवं निजामुद्दीन खान ने कार्यक्रम में शिरकत की।

डा. माधवी ने मंच की सराहना करते हुए कहा कि मंच से जुड़े 1,06,195 सदस्य मंच की ताकत है। संगठन की शक्ति को समझना व उपयोग करना होगा। जो एकल सदस्य मंच से नहीं जुड़े है, उन्हें जोड़ना तथा मजबूत करना मंच का उत्तरदायित्व है। प्रत्येक राज्य विशेष संस्कृति व सभ्यता से भरपूर है, एकल महिलाएं विशेष संस्कृति व सभ्यता में स्वयं को दक्ष बनाये तथा आजिविका का साधन बना कर स्वयं को आत्मनिर्भर करें।

डा. संघमित्रा ने बताया कि प्रत्येक वर्ग की एकल महिलाओं की अपनी-अपनी विशेष समस्याएं है उन समस्याओं की पहचान कर, क्या कार्यक्रम व योजनाएं बनायी जा सकती है, लिखित में सरकार के सामने प्रस्तुत करें ताकि सरकार एक्शन ले सके। मंच की मांगों का समर्थन करते हुए उन्होंने सहमति जताई कि सरकार एकल महिलाओं में केवल विधवा महिलाओं को ही शामिल न करे बल्कि अन्य परित्यकता, छोड़ी हुई, तलाकशुदा व उम्रदराज अविवाहित महिला सदस्यों को भी शामिल करें।

महिला एवं बाल विकास विभाग की सहसचिव श्रीमती शारदा अली खान ने मंच को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि आपके द्वारा उठाये गये कदम सही है। एकल वो लोग हैं जिसके अन्दर क्षमता नही है, विश्वास नही है। आप शोषण के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं, आप अकेले नही हैं!

एकल महिलाओं के लिये सामाजिक सुरक्षा पर एक पैनल चर्चा की गयी जिसमें सामाजिक कार्यकर्ता निखिल डे ने सामाजिक सुरक्षा पेंशन की जानकारी के साथ ही सरकार के साथ किये जा रहे पैरवी के प्रयासों के बारे में बताया। मंच की अध्यक्ष निर्मल चन्देल व सचिव सुहागिनी टुडु ने 13 राज्यों में एकल महिलाओं के लिये चलायी जा रही पेंशन की स्थिति, समस्या व चुनौतियों पर प्रकाश डाला। साथ ही पैनल द्वारा मंच को एकल महिला की सामाजिक सुरक्षा के लिये क्या कदम उठाये जाने चाहिये पर सुझाव दिये गये।

सभी राज्यों से आये सदस्यों ने उनके-उनके क्षेत्र में एकल महिलाओं की स्थिति व संगठन द्वारा किये जा रहे प्रयासों, सफलताओं को एक दूसरे के साथ साझा किया। रात्रि में सभी राज्यों ने विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

एकल महिला के जमीन व आजिविका मुद्दे पर पैनल चर्चा की गई। प्रिती धील्लोन एवं निजामुद्दीन खान ने महाराष्ट्र, झारखण्ड व हिमाचल प्रदेश राज्य में किये गये अनुसंधान के आंकड़ो पर चर्चा की जिनमें उन्होंने बताया कि सरकार केवल विधवा महिलाओं को ही एकल महिला मानती है। उनके अध्ययन में निकल कर आया कि केवल 20-25 प्रतिशत महिलायें के खुद के घर है। गुजरात की सुशीला प्रजापति ने बताया की जमीन एक संसाधन ही नही एकल महिलाओं के मान सम्मान से जीने का जरिया भी है। महिलाओं को उनके हिस्से की जमीन मिलनी चाहीये। महिला किसान अधिकार मंच की सोमा के. पी. ने बताया की महिलाये कृषि करती है परन्तु मालिकाना हक पुरूष का होता है महिला का नही, हमारा सगंठन इतना बड़ा व मजबूत है तो हम साथ मिलकर इसके लिये लड़ना चाहिये। राष्ट्रीय महिला आयोग अध्यक्ष ललीता कुमार मंगलम ने बताया की वे भी एकल महिला है और एकल महिलाओं की समस्या को समझ सकती है। उन्होंने बताया कि आप ऐसे कौशल कार्य सीखें जो आपकी आजीविका का साधन बन सके, सबसे पहले तो आपको अपने अधिकारों के बारे में जानकारी होनी चाहिये। महिला आयोग एकल महिलाओं के लिये क्या सहयोग कर सकता है ये जानकारी उपस्थित सदस्यों ने श्रीमती ललिता से पूछा तथा अपेक्षा की कि महिला आयोग एकल महिलाओं के प्रयासों में उन्हें सहयोग करें।

अन्त में सभी राज्यों के सदस्यों ने गीत व नारों के साथ कार्यक्रम का समापन किया।

संगठन की बहनों ने टीना को दिलवाया हिस्सा

बहनों याद रखो कि जब हम किसी समस्या से घिरे हों तो हमें हौंसला नहीं खोना चाहिए। क्यों कि बड़ी समस्या को हल करने पर छोटी-मोटी व नई समस्याऐं तो आयेंगी ही लेकिन हमें हार नहीं माननी चाहिए बल्कि कोशिश जारी रखनी चाहिये और कितनी भी बड़ी समस्या हो हमें संगठन में रहकर मुकाबला करना चाहिए।

ऐसा ही कुछ नन्दू बाई के केस में हुआ जो कि कंचन नगर, जिला अजमेर की रहने वाली है और संगठन की सदस्य है। नन्दू बाई की बेटी है जिसका नाम टीना है। टीना के ससुराल वालों ने टीना के साथ मारपीट की और उसे घर से निकाल दिया। ये संगठन की सदस्य हैं। इसलिए वे संगठन की हर माह होने वाले मीटिंग में आई और अपनी बेटी के साथ जो भी हुआ वह सब संगठन की बहनों के सामने बताया। उन्होंनें संगठन की बहनों को कहा कि मेरी बेटी के साथ मारपीट हुई व उसे घर से बाहर निकाल दिया। ससुराल वालों ने वह मकान भी बेच दिया जिसमें टीना रहती थी। सभी बहनों ने निर्णय लिया की नन्दू बाई की बेटी को दहेज व भरण पोषण व मकान के पैसे भी दिलायेंगे। फिर 8-10 बहनें टीना के ससुराल तोपदड़ा जो कि अजमेर जिले में है वहां गई। सास-ससुर व देवर-जेठ और मोहल्ले वाले को इकट्टा किया और समझाया। संगठन का दबाव डाला या तो मकान में से टीना को हक दो नहीं तो हम संगठन की और से दावा करेंगे। फिर वकील साहब को बुलाया गया।

वकील साहब ने भी संगठन का दबाव डाला की यह विधवा, एकल परित्यकता महिलाओं का बहुत बड़ा संगठन है और आपसे टीना का जो भी हिस्सा बनता है लेकर रहेगें। इसलिए प्रेम से इनका हिस्सा दे दो नहीं तो संगठन आपको जेल भेज देगा। सास-ससुर बोले हमें जेल नहीं जाना है। हम टीना का हिस्सा दे देंगे।

फिर टीना के माता पिता और संगठन की बहनें मोहनी बाई, विमला बाई, ममता, रतन और वकील साहब इन पांच लोगों को बैठा कर जो मकान के पैसे आये इनके तीन हिस्से कर दिये। फिर उसी समय 4,90,000/- रूपये टीना को दे दिये। संगठन की ओर से 100 रूपये के स्टाम्प पर लिखवाया कि यह पैसे टीना के बच्चों के हैं। इसमें किसी का हक नहीं है और दो दिन बाद टीना को 50 गज जमीन तीन लाख में दिलवा दी और 1 लाख रूपये दोनों बच्चों के नाम एल0आई0सी0 करवा दी। बाकी पैसे घर खर्च के लिए रख लिए। उसी समय टीना को दहेज भी मिल गया और भरण पोषण के लिए केस कोर्ट में चल रहा है। टीना अब मजे से रह रही है और संगठन को धन्यवाद् देती है।

संगठन ने मेरे जैसी कई गरीब व बैसहारा बहनों की जिन्दगी बदल दी-मोहनी देवी

मेरा नाम मोहनी देवी है, मै अजमेर जिले की रहने वाली हूँ और एकल नारी शक्ति संगठन की संगठन कार्यकर्ता हूँ। मैनें शादी होने से लेकर संगठन से जुड़ने तक मेरी जिन्दगी में काफी उतार चढ़ाव देखे हैं। मेरी जिन्दगी में दुखों के सिवा कुछ नहीं था। लेकिन संगठन से जुड़ने के बाद मुझमें हिम्मत आई है, मैं अपने निर्णय खुद लेने लगी हूँ और संगठन से जुड़कर ही मैं अपने हकों को लेने में सफल हुई हूँ।

घर में सबसे छोटी होने के कारण मेरा लालन-पालन बहुत लाड़-प्यार से हुआ। लेकिन मेरे दुखों की शुरूआत जब हुई तब मेरे माता-पिता ने मेरी शादी छोटी उम्र में ही कर दी और 19 वर्ष की उम्र में मेरा गौना कर दिया। मेरे सास-ससुर, पति का व्यवहार मेरे साथ अच्छा था लेकिन मेरे जेठ-जैठानी का व्यवहार ठीक नहीं था। वे मेरे काम में गलतीयां निकालते, मेरे पति से मेरी शिकायत करते और मेरे रहन-सहन को लेकर भी ताने मारते थे। कुछ समय बाद मेरे पति और मेरे बीच काफी तनाव रहने लगा। वे भी मेरे साथ ठीक प्रकार से नहीं रहते थे। वे मुझसे लड़ाई-झगड़ा और मारपीट करने लगे थे। इस प्रकार मैं ससुराल में लगभग 8 वर्ष तक रही। इन आठ वर्षो में मेरे 3 संतान हुई जिसमें 2 लड़के और 1 लड़की थी। मेरा एक लड़का बीमारी की वजह से गुजर गया। मैं काफी दुखी थी मेरे परिवार में दुखों का पहाड़ टूट पड़ा क्यों की एक दिन मेरे पति की भी मृत्यु हो गई। जब लोग मेरे पति को शमशान लेकर गये तो पीछे से जैठानी मुझे ताने मारने लगी और कहने लगी की ऐसे रोने-धोने से कुछ नहीं होगा।

अब अपने बोरिया बिस्तर बांध लो। उस समय मैं कुछ नहीं समझ पाई लेकिन कुछ समय बाद उन्होंने मुझ पर जुल्म करना शुरू कर दिया और मुझे घर से निकाल दिया। मेरे पीहर वाले मुझे घर लेकर आ गये यहां कुछ समय तो ठीक-ठाक रहा लेकिन उसके बाद मेरी भाभी ने बोलना बंद कर दिया। मैं समझ गयी की अब ज्यादा दिन मैं इनके सहारे यहां नहीं रह सकती। मैंने सोचा की क्यों न मैं कुछ काम करूं और दो पैसे कमाऊं तो मैंने मेरे भाई से कहकर एक सिलाई मशीन लोन पर खरीद ली और सिलाई कढ़ाई करने लगी। उसके बाद मैं अजमेर आ गई। यहां मैंने सिलाई-कढ़ाई करके अपने बच्चों का गुजारा करना शुरू कर दिया।

उसी समय मुझे पता लगा की यहां दौलत बाग में एकल नारी शक्ति संगठन की हर महीने मिटिंग होती है जिसमें विधवा, एकल और परित्यकता महिलाऐं आती है। तो मैंने भी निर्णय किया की मैं भी मिटिंग में जाउंगी। एक दिन में मिटिंग में गई वहां सभी बहनों का बोल-चाल का तरीका और सोच देखकर मैंने तुरन्त 10 रूपये की रसीद कटवाई और बिल्ला लेकर संगठन की सदस्य बन गई। फिर मैं हर माह मिटिंग में जाने लगी और वहां छग्गी बाई के साथ काम करके मुझे अपने आप में परिवर्तन लगने लगा। मुझमें हौसला आने लगा और मेरी सोच बढ़ने लगी। मैं बहनों के हक के लिए काम करने लगी। एक दिन मैंने संगठन की मदद से अपना हक लेने की ठान ली और मेरे ससुराल में जाकर वहां लोगों और ससुराल वालों से बात की और एकल नारी शक्ति संगठन के बारे में बताते हुए उन्हें एकल नारी की आवाज दी और कहा कि मुझे इस घर में और जमीन में हिस्सा चाहिए। अगर तुम नहीं दोगे तो मैं संगठन की बहनों को गांव में लाउंगी और अपना हक लूंगी। ये सब सुन कर वहां उपस्थित गांव के लोग, सरपंच, पटवारी चौंक गये और कहने लगे की मोहनी में तो बहुत बदलाव आ गया है। ये तो बहुत बड़ी-बड़ी बातें करने लग गई है। इस के बाद मैं संगठन की बहनों को लेकर गांव में जाने लगी। इस तरह बार-बार कोशिश करने पर एक दिन मुझे ससुराल वालों ने मेरा हिस्सा दे दिया।

इधर संगठन की छग्गी बाई ने मेरी सोच को देखते हुए संगठन की कार्यकर्ता बनाने का फैसला कर लिया और मुझे संगठन की कार्यकर्ता बनाया। उन्होंने मुझे बहुत हौंसला दिया और मेरी हर जगह मदद की। मुझे पढ़ना-लिखना सीखने के लिए प्रोत्साहित किया। उनकी वजह से आज मैं अपनी आवाज लिख पा रही हूँ। मैं संगठन व संगठन की बहनों तथा छग्गी बाई को बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूँ कि उनकी वजह से मुझे आज इतनी शक्ति मिली है कि मैं अपने हक ले पाई हूँ और मेरी तरह अन्य दूखी बहनों के हक और न्याय के लिए काम करती हूँ।

मैं चाहती हूँ की संगठन की बहनें मजबूत हों उनकी सोच बढ़े और वो भी अपने हक अधिकारो की लड़ाई लड़े और उसमें कामयाब हो।

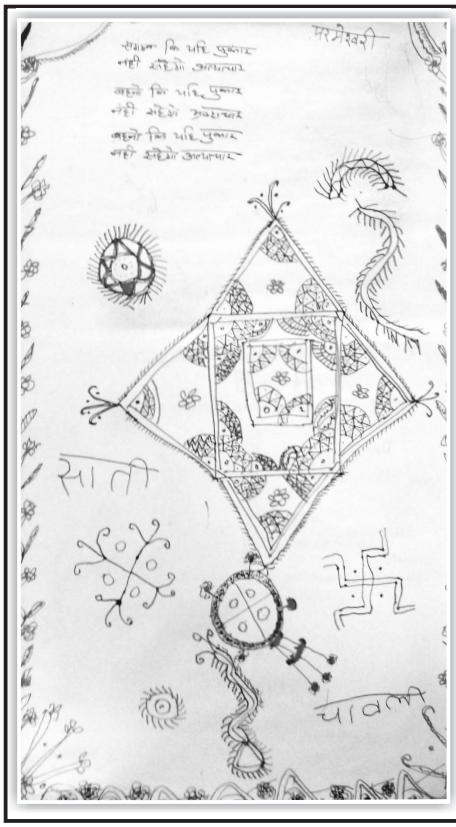

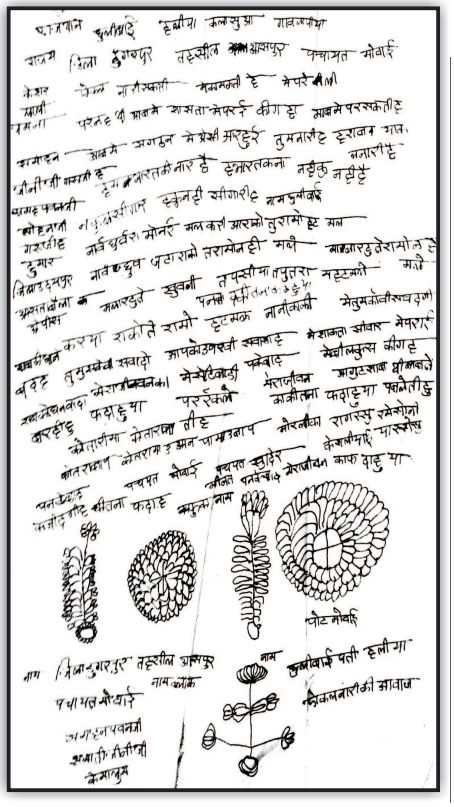

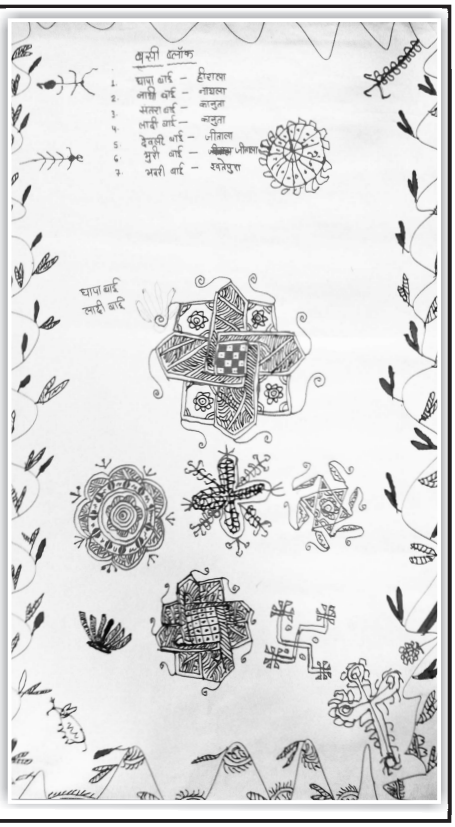

प्रिय बहनों, ये पेज आपके लिए ही है इसलिए आप अपनी भावनाऐं जैसे कविता, चित्र, गीत, नारे अथवा अपने जीवन के संघर्ष व अनुभव को कागज पर लिखकर व बताकर दे सकती है ताकि हम अपने अनुभवों को एक-दूसरे को आदान-प्रदान कर सकते हैं और एक दूसरे से सीख सकते हैं-आपकी बहिन कंकू बाई (अध्यक्ष)

दो दिवसीय राज्य स्तरीय सदस्य बैठक आयोजित

ले कर रहेंगी अपना अधिकार....

बहुत सहा है अब ना सहेंगी,
अपने हक हम लेकर रहेंगी।

बैठक में संगठन कार्यो की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए संभागी

भीलवाड़ा, 19 जुलाई। एकल नारी शक्ति संगठन की दो दिवसीय राज्य स्तरीय सदस्य बैठक दिनांक 19-20 जुलाई 2014 को गजोधर सवाईमासिंहका धर्मशाला, भीलवाड़ा में आयोजित की गई। जिसमें 31 जिलों के 72 संभागियों ने भाग लिया। बैठक में संगठन के माध्यम से किये गये चार माह के कार्यो का प्रस्तुतीकरण किया गया। जिसमें एकल महिलाओं के विशेष केस, एकल महिलाओं के मुद्दों व समस्याओं पर चर्चा की गई व साथ ही चार माह में नये संगठन सदस्य जुडे उसके बारें में बताया गया जिसमें निकल कर आया कि इन चार माह मे 770 नये सदस्य संगठन से जुड़े व कुल सदस्य 45,595 हो चुके हैं। बैठक के दौरान 2 जून को जयपुर में राज्य स्तर पर मनाये गये महिला सशक्तिकरण दिवस का मूल्यांकन किया गया, जिसमें बहिनों ने बताया गया कि कार्यक्रम सफल रहा महिलाओं में काफी जोश था व उसके बाद 12 जून को मुख्यमंत्री द्वारा प्री बजट कार्यशाला मे संगठन सदस्यों को आमंत्रित किया गया साथ ही लोबिंग भी की गई। दिसम्बर से मार्च तक की संगठन की गतिविधियों की आयोजना तय की गई। राज्य स्तर पर एकल नारी अधिकार मंच को पुर्नगठन करने व अन्य एकल महिला संगठन/संस्थाओ की पहचान कर उन्हें मंच पर जोड़ने के बारे मे चर्चा की गई।

ब्लॉक प्रशिक्षण व सम्मेलनों मे संगठन सदस्यों की कम होती संख्या पर चर्चा की गई जिसमे निकल कर आया कि ब्लॉक मासिक बैठक प्रत्येक दूसरे माह करने से संगठन सदस्याऐ टूट रही हैं, इसलिए प्रति माह बैठक होनी चाहिए संगठन की मजबूती के लिए यह अति आवश्यक है। इसी चर्चा के आधार पर संगठन की ब्लॉक मासिक बैठक प्रतिमाह करने पर निर्णय लिया गया जिसमे तय किया गया कि बैठक प्रतिमाह करने हेतू ब्लॉक कमेटी सदस्यों का भी सहयोग लिया जाना है जिसमें प्रति सदस्य 10 रु प्रतिमाह देगी। आगामी राज्य स्तरीय सदस्य बैठक 29-30 नवम्बर, 2014 को उदयपुर में तय की गई।

नये ब्लॉकों में संगठन के कार्यो की शुरूआत

संगठन चाहता है कि राजस्थान की सभी गरीब एकल महिलाऐं सशक्त हो और अपनी शक्ति को पहचाने ताकी वे अपने हक व अधिकारों को ले सकें व समाज में सम्मानपूर्ण व गुणवत्तापूर्ण जीवन जी सके। इसके लिये नये जिलों और ब्लॉकों का गठन किया जाता है। संगठन का विस्तार करते हुए इस बार श्रीगंगानगर व धोलपुर जिले में दो नये ब्लॉकों को एकल नारी शक्ति संगठन के कार्यक्षेत्र में जोड़ा गया है। इन नये ब्लॉकों में भी अब संगठन द्वारा एकल, गरीब, विधवा व परित्यकता महिलाओं के साथ कार्य किया जायेगा।

इस क्रम में प्रथम ब्लॉक गठन श्रीगंगानगर जिले का रायसिंहनगर में दिनांक 6 अगस्त, 2014 को किया गया जिसमें रायसिंहनगर पंचायत समिति पर बड़ी ब्लॉक मिटिंग आयोजित की गई। जिसमें 12 ग्राम पंचायत से 50 एकल महिलाओं ने भाग लिया। महिलाओं ने बताया कि हमें पेंशन के अलावा और अन्य योजनाओं का लाभ नही मिल रहा और नरेगा का कार्य भी नही चल रहा है। इसके अलावा यहां पर अन्य काफी समस्याऐं भी निकल कर भी आई।

दूसरे ब्लॉक गठन के रूप में धोलपुर जिले का ब्लॉक बसेड़ी संगठन से जोड़ा गया। यह गठन दिनांक 17 सितम्बर, 2014 को किया गया जिसमें 13 ग्राम पंचायतों से लगभग 200 संभागियों ने भाग लिया। इस गठन का कवरेज लेने हेतु मीड़िया से भी लोग पहुंचे थे। इस प्रकार संगठन अब राजस्थान में 33 जिलों व 139 ब्लॉकों में सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है। इसके लिए अलग-अलग ब्लॉकों में संगठन की बड़ी बैठकें रखी गई थी। यहां बड़ी संख्या में एकल महिलाओं ने अपनी सहभागिता बनाई। इन बैठकों में अलग-अलग समूह बनाकर प्रत्येक पंचायत से दो-दो ब्लॉक कमेटी सदस्यों का चुनाव किया तथा अगले माह होने वाली बैठक की तारीख तय की गई। अब इन ब्लॉकों में हर महीने अन्य ब्लॉकों के समान ही मासिक बैठकें आयोजित की जायेगी और इस तरह एकल महिलाओं की शक्ति को संगठित करके उनकी समस्याओं का समाधान किया जायेगा।

सेवा में, बुक पोस्ट

श्रीमान / श्रीमती .....

पता .....

.....

..... पिन कोड .....

एकल नारी शक्ति संगठन के सदस्यों की संख्या

क्र.सं.	जिला	ब्लॉक	सदस्य
1.	अजमेर	9	4275
2.	राजसमंद	5	2070
3.	सिरोही	3	926
4.	डूंगरपुर	5	1225
5.	बांसवाड़ा	6	774
6.	उदयपुर	8	3365
7.	भीलवाड़ा	6	2487
8.	जोधपुर	5	1163
9.	नागौर	4	2162
10.	जालोर	2	955
11.	पाली	5	1727
12.	चित्तौड़गढ़	5	954
13.	टोंक	5	1174
14.	बारां	6	2593
15.	बूंदी	4	1420
16.	अलवर	3	1035
17.	सवाईमाधोपुर	5	1247
18.	जयपुर	4	1412
19.	कोटा	6	2139
20.	दौसा	4	1260
21.	बाड़मेर	4	889
22.	सीकर	4	848
23.	चुरू	3	2079
24.	झालावाड़	6	2992
25.	जैसलमेर	3	1303
26.	करौली	3	805
27.	प्रतापगढ़	4	761
28.	भरतपुर	3	743
29.	बीकानेर	2	227
30	हनुमानगढ़	2	341
31	झुंझनू	1	128
32	धोलपुर	2	54
33.	गंगानगर	2	62
		139	45,595

यदि कोई एकल महिला, एकल नारी शक्ति संगठन के बारे में कोई जानकारी चाहती है या सदस्य बनना चाहती है, अथवा अपने क्षेत्र को संगठन से जोड़ना चाहती है तो वह निम्न पते पर सम्पर्क करें -

एकल नारी शक्ति संगठन

- : पता : -

39, खारोल कोलोनी, उदयपुर-313004 (राज.)

फोन :0294-2451348 फैक्स :0294-2451391

3-पीपल्दा हाऊस, सिविल लाईन, कोटा -324008

फोन : 0744-2450726 फैक्स : 0744-2329536

ईमेल : astha39@gmail.com
ईमेल : enss_kota@yahoo.com
ईमेल : ensskota@gmail.com
ईमेल : enssrajasthan@gmail.com
Website: www.strongwomenalone.org